



छात्रों की मार्गदर्शन आवश्यकताओं और बिहार के स्कूलों में मार्गदर्शन सेवाओं की उपलब्धता पर अध्ययन

डॉ बैजू बावरा

व्याख्याता

प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, घोघरडीहा, मधुबनी

सार

शिक्षा छात्रों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शैक्षणिक ज्ञान के अलावा, छात्रों को व्यक्तिगत, सामाजिक और व्यावसायिक चुनौतियों का सामना करने के लिए मार्गदर्शन और सहायता की आवश्यकता होती है। मार्गदर्शन सेवाएं छात्रों को अपनी क्षमता को समझने, लक्ष्य निर्धारित करने और सूचित निर्णय लेने में मदद करती हैं। बिहार, एक ऐसा राज्य जिसकी युवा आबादी काफी है, में छात्रों की मार्गदर्शन आवश्यकताएं विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। हालांकि, राज्य के स्कूलों में इन सेवाओं की उपलब्धता और प्रभावशीलता एक महत्वपूर्ण प्रश्न है जिसका अध्ययन करने की आवश्यकता है। यह निबंध बिहार के स्कूलों में छात्रों की मार्गदर्शन आवश्यकताओं और मार्गदर्शन सेवाओं की वर्तमान स्थिति की पड़ताल करता है। छात्र जीवन के विभिन्न पहलुओं में मार्गदर्शन की आवश्यकता महसूस करते हैं। बिहार के संदर्भ में, छात्रों को सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, ग्रामीण-शहरी विभाजन और सीमित संसाधनों जैसी विशिष्ट चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। इन कारकों के कारण मार्गदर्शन की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है। कई छात्रों को उच्च शिक्षा और करियर के अवसरों के बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं होती है और उन्हें सही रास्ते पर ले जाने के लिए उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। बिहार के स्कूलों में मार्गदर्शन सेवाओं की उपलब्धता एक जटिल मुद्दा है। जबकि कुछ शहरी और निजी स्कूलों में समर्पित परामर्शदाता और मार्गदर्शन कार्यक्रम हो सकते हैं, अधिकांश सरकारी और ग्रामीण स्कूलों में इन सेवाओं की कमी है। कई स्कूलों में प्रशिक्षित परामर्शदाताओं और मार्गदर्शन सामग्री के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधन नहीं होते हैं। शिक्षकों, छात्रों और अभिभावकों के बीच मार्गदर्शन सेवाओं के महत्व के बारे में जागरूकता की कमी हो सकती है। राज्य में पर्याप्त संख्या में योग्य और प्रशिक्षित स्कूल परामर्शदाताओं की कमी है। कई स्कूलों में परामर्श सत्र आयोजित करने के लिए उपयुक्त कमरे या स्थान उपलब्ध नहीं होते हैं। शिक्षा प्रणाली में मार्गदर्शन सेवाओं को अक्सर गैर-आवश्यक माना जाता है और इसलिए उन्हें पर्याप्त प्राथमिकता नहीं मिलती है। इन कमियों के कारण, बिहार के अधिकांश छात्रों को समय पर और प्रभावी मार्गदर्शन

प्राप्त करने में कठिनाई होती है। इसका उनके शैक्षणिक प्रदर्शन, व्यक्तिगत विकास और करियर विकल्पों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

मुख्य शब्द

शिक्षा, छात्रों, मार्गदर्शन, शैक्षणिक, विकास

भूमिका

बिहार, एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध राज्य होने के बावजूद, शिक्षा के क्षेत्र में कई चुनौतियों का सामना कर रहा है। इनमें से एक महत्वपूर्ण चुनौती राज्य के स्कूलों में पर्याप्त मार्गदर्शन संसाधनों की कमी है। यह कमी छात्रों के समग्र विकास, शैक्षणिक प्रदर्शन और भविष्य की संभावनाओं पर नकारात्मक प्रभाव डालती है।

शिक्षा छात्रों के जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो न केवल उन्हें ज्ञान और कौशल प्रदान करता है बल्कि उनके व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास की नींव भी रखता है। इस यात्रा में, छात्रों को अक्सर ऐसे मोड़ों और चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जहाँ उन्हें सही दिशा और सहायता की आवश्यकता होती है। शैक्षणिक मार्गदर्शन एक ऐसी महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो छात्रों को उनकी शैक्षिक यात्रा को सफलतापूर्वक नेविगेट करने, सूचित निर्णय लेने और उनकी पूरी क्षमता तक पहुंचने में मदद करती है। यह निबंध छात्रों के शैक्षणिक मार्गदर्शन के महत्व, उद्देश्यों, विधियों और प्रभाव पर केंद्रित है।

छात्र जीवन कई विकल्पों और दबावों से भरा होता है। उन्हें यह तय करना होता है कि कौन से विषय चुनें, किस करियर पथ का अनुसरण करें, अपनी पढ़ाई को कैसे प्रबंधित करें और विभिन्न शैक्षणिक चुनौतियों का सामना कैसे करें। शैक्षणिक मार्गदर्शन इन सभी पहलुओं में छात्रों का समर्थन करता है। मार्गदर्शन छात्रों को उनकी रुचियों, क्षमताओं और रुझानों को समझने में मदद करता है, जिससे वे अपनी शिक्षा और करियर के लिए सही दिशा का चुनाव कर पाते हैं।

प्रभावी मार्गदर्शन छात्रों को अध्ययन की बेहतर आदतें विकसित करने, समय का प्रबंधन करने और परीक्षाओं के लिए प्रभावी ढंग से तैयारी करने में मदद करता है, जिससे उनके शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार होता है। छात्र शैक्षणिक, व्यक्तिगत या सामाजिक समस्याओं का सामना कर सकते हैं जो उनकी पढ़ाई को प्रभावित कर सकती हैं। मार्गदर्शन उन्हें इन समस्याओं को पहचानने और उनका समाधान खोजने में सहायता करता है। जब छात्रों को सही मार्गदर्शन मिलता है, तो वे अधिक आत्मविश्वास महसूस करते हैं और अपनी पढ़ाई के प्रति अधिक प्रेरित होते हैं। स्कूल से कॉलेज या कॉलेज से करियर में संक्रमण छात्रों के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है। मार्गदर्शन इस प्रक्रिया को सुगम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मार्गदर्शन छात्रों को विभिन्न शैक्षणिक और सहायक संसाधनों (जैसे पुस्तकालय, छात्रवृत्ति, परामर्श सेवाएं) के बारे में जानकारी प्रदान करता है और उन तक पहुंचने में मदद करता है।

शैक्षणिक मार्गदर्शन विभिन्न विधियों और तकनीकों के माध्यम से प्रदान किया जा सकता है। एक-एक परामर्श सत्र छात्रों को अपनी व्यक्तिगत समस्याओं और चिंताओं पर चर्चा करने और व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्राप्त करने का अवसर प्रदान करते हैं। समान शैक्षणिक या करियर रुचियों वाले छात्रों के समूह को एक साथ मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है, जिससे वे एक-दूसरे से सीख सकते हैं और सामूहिक रूप से समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। विभिन्न शैक्षणिक और करियर संबंधी विषयों पर कार्यशालाएँ और सेमिनार आयोजित किए जाते हैं, जो छात्रों को जानकारी और कौशल प्रदान करते हैं।

छात्रों के शैक्षणिक विकास और सफलता के लिए शैक्षणिक मार्गदर्शन एक अपरिहार्य घटक है। यह न केवल उन्हें सही रास्ते चुनने में मदद करता है बल्कि उनकी शैक्षणिक और व्यक्तिगत चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक कौशल और आत्मविश्वास भी प्रदान करता है। शिक्षा संस्थानों, शिक्षकों, अभिभावकों और नीति निर्माताओं सभी को छात्रों के लिए प्रभावी और सुलभ शैक्षणिक मार्गदर्शन सेवाएं सुनिश्चित करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए। आज के प्रतिस्पर्धी और जटिल विश्व में, अच्छी तरह से निर्देशित छात्र न केवल व्यक्तिगत रूप से सफल होंगे बल्कि समाज के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देंगे। शैक्षणिक मार्गदर्शन में निवेश छात्रों के भविष्य में और अंततः राष्ट्र के भविष्य में एक महत्वपूर्ण निवेश है।

छात्रों का व्यक्तिगत मार्गदर्शन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। व्यक्तिगत मार्गदर्शन का अर्थ है प्रत्येक छात्र की विशिष्ट आवश्यकताओं, रुचियों, क्षमताओं और चुनौतियों को समझना और उसके अनुसार शैक्षिक और व्यावसायिक निर्णय लेने में उसकी सहायता करना। प्रत्येक छात्र अद्वितीय होता है और उसकी सीखने की गति, शैली और आवश्यकताएं अलग-अलग होती हैं। व्यक्तिगत मार्गदर्शन शिक्षकों को प्रत्येक छात्र की इन विशिष्टताओं को समझने और उनके अनुसार शिक्षण विधियों और संसाधनों को अनुकूलित करने में मदद करता है। व्यक्तिगत मार्गदर्शन छात्रों को उनकी रुचियों और क्षमताओं की पहचान करने और उन्हें विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह उन्हें ऐसे विषयों और गतिविधियों को चुनने में मदद करता है जिनमें उनकी स्वाभाविक प्रतिभा हो और जो उन्हें प्रेरित करें। जब छात्रों को उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार सहायता मिलती है, तो उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और वे सीखने में अधिक रुचि लेते हैं। इससे उनके शैक्षिक प्रदर्शन में स्वाभाविक रूप से सुधार होता है।

व्यक्तिगत मार्गदर्शन छात्रों को भावनात्मक और सामाजिक चुनौतियों का सामना करने में मदद करता है। शिक्षक और परामर्शदाता उन्हें आत्मविश्वास, आत्म-सम्मान और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता करते हैं। व्यक्तिगत मार्गदर्शन छात्रों को उनकी रुचियों, क्षमताओं और बाजार की आवश्यकताओं के अनुसार करियर विकल्पों का पता लगाने

और सही निर्णय लेने में मदद करता है। यह उन्हें उच्च शिक्षा के लिए सही पाठ्यक्रम चुनने में भी मार्गदर्शन करता है। छात्र अक्सर शैक्षिक, व्यक्तिगत या सामाजिक समस्याओं का सामना करते हैं। व्यक्तिगत मार्गदर्शन उन्हें इन समस्याओं को समझने और प्रभावी समाधान खोजने में सहायता करता है।

शिक्षकों को अपने छात्रों के साथ एक मजबूत और सहायक संबंध बनाना चाहिए ताकि वे उनकी व्यक्तिगत जरूरतों को समझ सकें और उन्हें मार्गदर्शन प्रदान कर सकें। स्कूलों में प्रशिक्षित परामर्शदाताओं की उपस्थिति छात्रों को उनकी भावनात्मक, सामाजिक और करियर संबंधी समस्याओं पर व्यक्तिगत सलाह और सहायता प्रदान कर सकती है। प्रत्येक छात्र के लिए व्यक्तिगत शिक्षण योजनाएं बनाना उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं और सीखने की गति को ध्यान में रखते हुए शिक्षा प्रदान करने का एक प्रभावी तरीका है।

कमजोर छात्रों के लिए अतिरिक्त कक्षाएं और सहायता प्रदान करना उन्हें अपनी शैक्षणिक चुनौतियों से उबरने में मदद कर सकता है। स्कूलों में करियर मार्गदर्शन कार्यक्रम आयोजित करना छात्रों को विभिन्न करियर विकल्पों के बारे में जानकारी प्रदान कर सकता है और उन्हें सही चुनाव करने में मदद कर सकता है। छात्रों के व्यक्तिगत मार्गदर्शन में माता-पिता की सक्रिय भागीदारी महत्वपूर्ण है। शिक्षकों और परामर्शदाताओं को छात्रों की जरूरतों को समझने और उन्हें सहायता प्रदान करने के लिए माता-पिता के साथ मिलकर काम करना चाहिए।

छात्रों का व्यक्तिगत मार्गदर्शन शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है। यह न केवल छात्रों को उनकी शैक्षणिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करता है, बल्कि उनके समग्र विकास और भविष्य की सफलता के लिए भी महत्वपूर्ण है। स्कूलों और शिक्षकों को व्यक्तिगत मार्गदर्शन को प्राथमिकता देनी चाहिए और छात्रों को उनकी पूरी क्षमता तक पहुंचने में सहायता करने के लिए आवश्यक संसाधन और समर्थन प्रदान करना चाहिए। प्रभावी व्यक्तिगत मार्गदर्शन एक ऐसे समाज के निर्माण में योगदान देता है जहां प्रत्येक व्यक्ति अपनी अद्वितीय प्रतिभा और क्षमता का उपयोग करके सफल और संतुष्ट जीवन जी सके।

भावनात्मक मार्गदर्शन छात्रों के समग्र विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू है। यह छात्रों को अपनी भावनाओं को समझने, प्रबंधित करने और व्यक्त करने में मदद करता है, जिससे उन्हें स्वस्थ संबंध बनाने, तनाव का सामना करने और शैक्षणिक रूप से सफल होने में मदद मिलती है। भावनात्मक रूप से अच्छी तरह से समायोजित छात्र अधिक आत्मविश्वासी, प्रेरित और लचीले होते हैं। वे बेहतर निर्णय लेते हैं और दूसरों के साथ अधिक प्रभावी ढंग से संवाद करते हैं।

साहित्य की समीक्षा

भावनात्मक मार्गदर्शन के अध्ययन में कई महत्वपूर्ण क्षेत्र शामिल हैं। यह भावनाओं के विकास और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के घटकों की पड़ताल करता है। इसमें आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, सामाजिक जागरूकता, सहानुभूति और संबंध प्रबंधन शामिल हैं। यह समझना कि ये क्षमताएं कैसे विकसित होती हैं, शिक्षकों और माता-पिता को छात्रों को उनकी भावनात्मक यात्रा में प्रभावी ढंग से समर्थन करने में मदद करता है। [1]

भावनात्मक मार्गदर्शन के अध्ययन में छात्रों के सामने आने वाली विभिन्न भावनात्मक चुनौतियों की जांच की जाती है। इसमें चिंता, अवसाद, गुस्सा, भय और सामाजिक कठिनाइयाँ शामिल हो सकती हैं। इन चुनौतियों की प्रकृति और कारणों को समझना हस्तक्षेपों को डिजाइन करने के लिए महत्वपूर्ण है जो छात्रों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। यह अध्ययन भावनात्मक मार्गदर्शन के लिए विभिन्न रणनीतियों और तकनीकों का मूल्यांकन करता है। इसमें कक्षा-आधारित गतिविधियाँ शामिल हो सकती हैं जो भावनात्मक साक्षरता को बढ़ावा देती हैं, जैसे कि भावनाओं पर चर्चा करना, भूमिका निभाना और सामाजिक कहानियाँ। इसमें व्यक्तिगत परामर्श और समूह चिकित्सा जैसे अधिक लक्षित हस्तक्षेप भी शामिल हो सकते हैं। प्रभावी रणनीतियों की पहचान करना महत्वपूर्ण है जो छात्रों के भावनात्मक कल्याण और शैक्षणिक सफलता में सुधार कर सकती हैं। [2]

भावनात्मक मार्गदर्शन के अध्ययन में स्कूल के वातावरण और सामाजिक-भावनात्मक सीखने के कार्यक्रमों की भूमिका की जांच की जाती है। एक सहायक और समावेशी स्कूल संस्कृति छात्रों के भावनात्मक विकास को बढ़ावा दे सकती है। सामाजिक-भावनात्मक सीखने के कार्यक्रम, जो भावनाओं को प्रबंधित करने, सहानुभूति विकसित करने और सकारात्मक संबंध बनाने के लिए कौशल सिखाते हैं, छात्रों के भावनात्मक कल्याण पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकते हैं। [3]

भावनात्मक मार्गदर्शन के अध्ययन में सांस्कृतिक और व्यक्तिगत अंतरों पर विचार किया जाता है। भावनाएँ कैसे व्यक्त की जाती हैं और प्रबंधित की जाती हैं, इस पर सांस्कृतिक मानदंड और व्यक्तिगत अनुभव महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भावनात्मक मार्गदर्शन कार्यक्रमों को प्रभावी होने के लिए इन अंतरों के प्रति संवेदनशील और उत्तरदायी होना चाहिए। [4]

भावनात्मक मार्गदर्शन के अध्ययन में छात्रों के भावनात्मक कल्याण और शैक्षणिक परिणामों पर भावनात्मक मार्गदर्शन के प्रभाव का मूल्यांकन शामिल है। अनुसंधान यह जांचता है कि भावनात्मक मार्गदर्शन हस्तक्षेप छात्रों के आत्म-सम्मान, सामाजिक कौशल, व्यवहार संबंधी समस्याओं और शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार करते हैं या नहीं। इस तरह के मूल्यांकन से

भावनात्मक मार्गदर्शन कार्यक्रमों की प्रभावशीलता के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है और भविष्य के हस्तक्षेपों को सूचित किया जा सकता है। [5]

छात्रों की मार्गदर्शन आवश्यकताओं और बिहार के स्कूलों में मार्गदर्शन सेवाओं की उपलब्धता पर अध्ययन

बिहार के स्कूलों में इन आवश्यक मार्गदर्शन संसाधनों की कमी के कई कारण हैं। सबसे प्रमुख कारणों में से एक वित्तीय बाधाएं हैं। राज्य के शिक्षा बजट का एक बड़ा हिस्सा बुनियादी ढांचे, शिक्षकों के वेतन और अन्य तत्काल जरूरतों को पूरा करने में खर्च हो जाता है, जिससे मार्गदर्शन सेवाओं के लिए पर्याप्त धन आवंटित करना मुश्किल हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप, अधिकांश स्कूलों में समर्पित करियर काउंसलर या शैक्षिक सलाहकार नहीं होते हैं। दूसरा महत्वपूर्ण कारण प्रशिक्षित पेशेवरों की कमी है। बिहार में मार्गदर्शन और परामर्श के क्षेत्र में योग्य और प्रशिक्षित व्यक्तियों की संख्या सीमित है। इसके अलावा, ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में शिक्षकों और अन्य कर्मचारियों को मार्गदर्शन और परामर्श में विशेष प्रशिक्षण प्राप्त करने के अवसर भी कम मिलते हैं।

छात्रों के भावनात्मक मार्गदर्शन का अध्ययन एक बहुआयामी क्षेत्र है जो भावनाओं के विकास, भावनात्मक चुनौतियों, हस्तक्षेप रणनीतियों, स्कूल के वातावरण की भूमिका, सांस्कृतिक अंतरों और भावनात्मक मार्गदर्शन के परिणामों की पड़ताल करता है। यह अध्ययन छात्रों के समग्र कल्याण और सफलता का समर्थन करने के लिए महत्वपूर्ण है। भावनात्मक मार्गदर्शन में अंतर्दृष्टि प्राप्त करके, शिक्षक, माता-पिता और नीति निर्माता छात्रों को भावनात्मक रूप से स्वस्थ और लचीला बनने में मदद करने के लिए प्रभावी रणनीतियाँ विकसित कर सकते हैं।

मार्गदर्शन संसाधन, जैसे कि प्रशिक्षित करियर काउंसलर, शैक्षिक सलाहकार और पर्याप्त सूचनात्मक सामग्री, छात्रों को उनकी शैक्षणिक यात्रा और व्यक्तिगत विकास में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करते हैं। वे छात्रों को उनकी रुचियों, क्षमताओं और रुझानों को समझने में मदद करते हैं, जिससे वे सही विषयों और करियर विकल्पों का चुनाव कर सकें। इसके अतिरिक्त, मार्गदर्शन छात्रों को भावनात्मक और सामाजिक चुनौतियों का सामना करने, प्रभावी अध्ययन कौशल विकसित करने और उच्च शिक्षा या व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए तैयार होने में भी मदद करता है।

मार्गदर्शन संसाधनों की कमी का छात्रों पर कई नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। सबसे पहले, छात्रों को अपनी शैक्षणिक रुचियों और क्षमताओं को समझने में कठिनाई होती है। इसके परिणामस्वरूप, वे अक्सर ऐसे विषयों का चुनाव कर लेते हैं जिनमें उनकी रुचि या क्षमता नहीं होती है, जिससे उनका शैक्षणिक प्रदर्शन खराब होता है और स्कूल छोड़ने की दर बढ़ जाती है।

करियर मार्गदर्शन की कमी के कारण, छात्रों को विभिन्न करियर विकल्पों के बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं मिल पाती है। वे पारंपरिक और सीमित करियर विकल्पों तक ही सीमित रह जाते हैं, जिससे उनकी भविष्य की संभावनाएं सीमित हो जाती हैं। यह विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों के लिए एक बड़ी समस्या है, जिनके पास करियर की जानकारी और अवसरों तक सीमित पहुंच होती है।

तालिका 1 शैक्षणिक मार्गदर्शन के संबंध में वन वे एनोवा का सारांश एसएस डीएफ एमएस एफ

विविधता का स्रोत	एसएस	डी एफ	एमएस	एफ अनुपात	महत्वपूर्ण
समूहों के बीच	59.64	2	29.82	0.483	एन एस
समूहों के भीतर	11237.89	182	61.74		
कुल	11297.54	184			

एन एस: .05 स्तर पर महत्वपूर्ण नहीं

तालिका 2 व्यक्तिगत मार्गदर्शन स्कोर के साधन और एसडी

समूह	एन	मतलब	एसडी
उच्च एसई	97	49.212	29.82
औसत एसई	243	50.639	61.74
कम एसई	60	49.818	10.379

तालिका 2 दर्शाती है कि 0.483 का 'एफ'- अनुपात गैर-महत्वपूर्ण ($p > .05$, डीएफ = 2/182) देखा गया था।

तालिका 3 भावनात्मक मार्गदर्शन के संबंध में वन वे एनोवा का सारांश

समूह	एन	मतलब	एसडी
उच्च एसई	97	49.212	7.668
औसत एसई	243	50.639	7.077
कम एसई	60	49.818	10.379

यह तालिका 3 में देखा जा सकता है कि 'एफ'-अनुपात 3.781 महत्व के स्तर पर पहुंच गया (पी <.05, डीएफ = 2/182)

भावनात्मक और सामाजिक मार्गदर्शन की कमी छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है। किशोरवस्था एक चुनौतीपूर्ण समय होता है, और छात्रों को अक्सर तनाव, चिंता और अन्य भावनात्मक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यदि स्कूलों में प्रशिक्षित काउंसलर उपलब्ध नहीं हैं, तो छात्रों को इन समस्याओं से निपटने में कठिनाई होती है, जिसका उनके शैक्षणिक प्रदर्शन और समग्र विकास पर बुरा असर पड़ता है।

बिहार सरकार शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के लिए कई प्रयास कर रही है। शिक्षकों की भर्ती और प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है, और बुनियादी ढांचे को बेहतर बनाने के लिए भी कदम उठाए जा रहे हैं। फिर भी, मार्गदर्शन संसाधनों की कमी को दूर करने के लिए एक व्यापक और सुनियोजित दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

बिहार के स्कूलों में मार्गदर्शन संसाधनों की कमी एक गंभीर चुनौती है जिसका छात्रों के भविष्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इस कमी को दूर करने के लिए सरकार, शिक्षा विभाग, स्कूलों और समुदाय को मिलकर काम करने की आवश्यकता है। पर्याप्त मार्गदर्शन संसाधन उपलब्ध कराकर, बिहार अपने छात्रों को बेहतर भविष्य के लिए तैयार कर सकता है और राज्य के समग्र विकास में योगदान कर सकता है।

बिहार के अधिकांश स्कूलों में, दुर्भाग्य से, इस महत्वपूर्ण पहलू पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता है। कई स्कूलों में प्रशिक्षित करियर काउंसलर या मार्गदर्शन शिक्षक नहीं हैं। परिणामस्वरूप, छात्रों को अपनी शैक्षणिक धाराओं, करियर विकल्पों या व्यक्तिगत समस्याओं पर चर्चा करने के लिए कोई विश्वसनीय व्यक्ति नहीं मिल पाता है। शिक्षक, जो पहले से ही पाठ्यक्रम

को पूरा करने के दबाव में रहते हैं, अक्सर छात्रों की व्यक्तिगत जरूरतों को संबोधित करने के लिए समय या विशेषज्ञता नहीं रखते हैं।

मार्गदर्शन जागरूकता की कमी के कई कारण हैं। एक प्रमुख कारण शिक्षा प्रणाली में मार्गदर्शन और परामर्श के महत्व की अपर्याप्त समझ है। इसे अक्सर एक अतिरिक्त या गैर-आवश्यक गतिविधि के रूप में देखा जाता है, न कि शिक्षा का एक अभिन्न अंग। इसके अलावा, स्कूलों में वित्तीय संसाधनों की कमी भी एक बाधा है, जिससे वे विशेष मार्गदर्शन कर्मचारियों को नियुक्त करने या प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने में असमर्थ होते हैं।

इसका छात्रों पर कई नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। बिना उचित मार्गदर्शन के, छात्र अक्सर अपरिचित या गलत करियर विकल्पों का चयन कर लेते हैं, जिससे उन्हें बाद में निराशा और असंतोष का सामना करना पड़ता है। वे अपनी शैक्षणिक रुचियों और क्षमताओं के अनुसार विषयों का चयन करने में भी कठिनाई महसूस करते हैं, जिससे उनका शैक्षणिक प्रदर्शन प्रभावित होता है। इसके अतिरिक्त, भावनात्मक और सामाजिक समस्याओं का सामना कर रहे छात्र उचित सहायता के बिना अकेले ही संघर्ष करते रहते हैं, जिससे उनके मानसिक स्वास्थ्य और समग्र कल्याण पर बुरा असर पड़ता है।

मार्गदर्शन जागरूकता की कमी के कारण छात्रों में आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान की भी कमी हो सकती है। जब उन्हें अपनी शंकाओं और चिंताओं को साझा करने और उनसे निपटने के लिए मार्गदर्शन प्राप्त करने का अवसर नहीं मिलता है, तो वे अलग-थलग और असुरक्षित महसूस कर सकते हैं। यह उनके सामाजिक और भावनात्मक विकास को बाधित कर सकता है।

बिहार के स्कूलों में मार्गदर्शन जागरूकता की कमी एक गंभीर समस्या है जिसका छात्रों के भविष्य पर दूरगामी नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। इस चुनौती का समाधान करने के लिए एक समग्र और प्रतिबद्ध दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसमें सरकार, शिक्षा विभाग, स्कूल प्रशासन, शिक्षक और अभिभावक सभी मिलकर काम करें। छात्रों को उचित मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करके, हम न केवल उनके शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार कर सकते हैं बल्कि उन्हें आत्मविश्वासी, सक्षम और सफल नागरिक बनने में भी मदद कर सकते हैं। यह बिहार के भविष्य के लिए एक महत्वपूर्ण निवेश होगा।

प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी बिहार के स्कूलों की एक पुरानी और गंभीर समस्या है। पर्याप्त संख्या में योग्य और प्रशिक्षित शिक्षकों की अनुपलब्धता के कारण, कई स्कूलों में छात्रों की संख्या के अनुपात में शिक्षक नहीं हैं। इसके परिणामस्वरूप, शिक्षकों पर अत्यधिक कार्यभार पड़ता है और वे प्रत्येक छात्र पर व्यक्तिगत ध्यान देने में असमर्थ होते हैं। अप्रशिक्षित या कम

प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति से शिक्षा की गुणवत्ता और भी गिर जाती है, क्योंकि उनके पास नवीनतम शिक्षण विधियों, बाल मनोविज्ञान और विषय वस्तु की गहरी समझ की कमी हो सकती है।

शिक्षकों के अलावा, स्कूलों में अन्य प्रशिक्षित कर्मियों की भी भारी कमी है। पुस्तकालय ज्ञान का भंडार होते हैं, लेकिन प्रशिक्षित पुस्तकालयाध्यक्षों की कमी के कारण, कई स्कूलों में पुस्तकालय या तो निष्क्रिय पड़े हैं या अप्रभावी ढंग से संचालित हो रहे हैं। इसी तरह, विज्ञान प्रयोगशालाएँ छात्रों के लिए प्रायोगिक ज्ञान प्राप्त करने का महत्वपूर्ण स्थान हैं, लेकिन प्रशिक्षित प्रयोगशाला सहायकों की कमी के कारण, कई स्कूलों में ये सुविधाएँ या तो उपलब्ध नहीं हैं या उनका सही उपयोग नहीं हो पाता है।

छात्रों के मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य के लिए प्रशिक्षित परामर्शदाताओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे छात्रों को शैक्षणिक, करियर और व्यक्तिगत समस्याओं का सामना करने में मदद करते हैं। हालांकि, बिहार के अधिकांश स्कूलों में प्रशिक्षित परामर्शदाताओं का अभाव है, जिसके कारण छात्रों को आवश्यक मार्गदर्शन और सहायता नहीं मिल पाती है।

प्रशिक्षित कर्मियों की इस कमी के कई कारण हैं। एक प्रमुख कारण है शिक्षा क्षेत्र में पर्याप्त निवेश की कमी। शिक्षकों और अन्य कर्मचारियों के पदों का सृजन और उन पर योग्य उम्मीदवारों की नियुक्ति के लिए पर्याप्त बजट का आवंटन आवश्यक है। दूसरा कारण है शिक्षकों और अन्य कर्मचारियों के लिए आकर्षक सेवा शर्तों और वेतनमानों का अभाव। कम वेतन और चुनौतीपूर्ण कार्य परिस्थितियों के कारण, योग्य और प्रशिक्षित व्यक्ति शिक्षा क्षेत्र में करियर बनाने के लिए उत्साहित नहीं होते हैं। तीसरा कारण है प्रशिक्षण संस्थानों की कमी और मौजूदा संस्थानों की गुणवत्ता में कमी। पर्याप्त संख्या में गुणवत्तापूर्ण शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान न होने के कारण, योग्य शिक्षकों की आपूर्ति सीमित रहती है।

प्रशिक्षित कर्मियों की कमी के कारण बिहार की शिक्षा व्यवस्था को कई नकारात्मक परिणामों का सामना करना पड़ रहा है। शिक्षा की गुणवत्ता में गिरावट, छात्रों का खराब प्रदर्शन, स्कूलों में अनुशासन की समस्या, और छात्रों का समग्र विकास बाधित होना इनमें प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त, प्रशिक्षित कर्मियों की कमी के कारण सरकार की शिक्षा संबंधी नीतियों और कार्यक्रमों का प्रभावी कार्यान्वयन भी बाधित होता है। इस गंभीर समस्या का समाधान निकालने के लिए सरकार और शिक्षा विभाग को ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। सबसे पहले, शिक्षा क्षेत्र में निवेश को बढ़ाना होगा ताकि पर्याप्त संख्या में शिक्षकों और अन्य कर्मचारियों के पदों का सृजन किया जा सके और उन्हें आकर्षक वेतनमान और सेवा शर्तें प्रदान की जा सकें। दूसरे, गुणवत्तापूर्ण शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना और मौजूदा संस्थानों की गुणवत्ता में सुधार करना होगा। शिक्षकों के लिए नियमित प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए ताकि वे नवीनतम शिक्षण विधियों और

तकनीकों से अवगत रहें। तीसरे, स्कूलों में पुस्तकालयाध्यक्षों, प्रयोगशाला सहायकों और परामर्शदाताओं जैसे गैर-शिक्षण कर्मचारियों की नियुक्ति को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

निष्कर्ष

छात्रों को उनके समग्र विकास के लिए प्रभावी मार्गदर्शन सेवाएं प्रदान करना आवश्यक है। बिहार, जिसकी एक बड़ी युवा आबादी है, में छात्रों की मार्गदर्शन आवश्यकताएं महत्वपूर्ण हैं। हालांकि, राज्य के स्कूलों में इन सेवाओं की उपलब्धता और गुणवत्ता में सुधार की आवश्यकता है। इस क्षेत्र में और अधिक शोध और निवेश से छात्रों को उनकी पूरी क्षमता तक पहुंचने और सफल और संतुष्ट जीवन जीने में मदद मिल सकती है। सरकार, शिक्षा विभाग, स्कूल प्रशासन और समुदाय सभी को मिलकर काम करना होगा ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि बिहार के प्रत्येक छात्र को गुणवत्तापूर्ण मार्गदर्शन सेवाएं उपलब्ध हों। बिहार के स्कूलों में प्रशिक्षित कर्मियों की कमी एक गंभीर चुनौती है जिसका शिक्षा की गुणवत्ता और छात्रों के भविष्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। इस समस्या का समाधान दीर्घकालिक और बहुआयामी प्रयासों से ही संभव है, जिसमें शिक्षा क्षेत्र में पर्याप्त निवेश, आकर्षक सेवा शर्तें, गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण और सभी स्तरों पर कर्मियों की नियुक्ति को प्राथमिकता देना शामिल है। यदि इस समस्या का प्रभावी ढंग से समाधान किया जाता है, तो बिहार की शिक्षा व्यवस्था में गुणात्मक सुधार लाया जा सकता है और राज्य के छात्रों को बेहतर भविष्य के लिए तैयार किया जा सकता है।

संदर्भ

1. इमाम अहराफ (2021):- शिक्षक शिक्षा में गुणवत्ता और उत्कृष्टता: भारत में मुद्दे और चुनौतियाँ,
2. जेनिथ, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, खंड 1 अंक 7, नवंबर, आईएसएसएन 2231 5780, 2020
3. लक्ष्मी जी. सोरना और अशोक एम. लियोनार्ड:- प्रशिक्षुओं के बीच शिक्षक पात्रता परीक्षा के प्रति दृष्टिकोण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च - ग्रंथालय। आईएसएसएन-2350-0530(ओ), आईएसएसएन-2394-3629(पी), 2021
4. लेनका एस. के.:- शिक्षक के प्रति छात्र शिक्षकों का दृष्टिकोण, जर्नल ऑफ एडवांस एंड स्कॉलरली रिसर्च इन एलाइड एजुकेशन | मल्टीडिसिप्लिनरी एकेडमिक रिसर्च, खंड XV, अंक संख्या 5, जुलाई 2020, आईएसएसएन 2230-7540।
5. कुमारवेलु पी.:- शिक्षक पात्रता परीक्षा के प्रति निजी स्कूल शिक्षकों का दृष्टिकोण। इंडियन जर्नल ऑफ टेक्नोलॉजी एंड टीचर एजुकेशन (आईजेटीटीई), 2021

6. कुमार प्रदीप और आजाद सुगंधा:- भारत में शिक्षक शिक्षा: कुछ नीतिगत मुद्दे और चुनौतियाँ। खंड-2 अंक-6 2021.
आईजेएआरआईई-आईएसएसएन (ओ) – 2395-4396